श्री लक्ष्मीनृसिंह करावलम्ब स्तोत्रम्

श्रुति स्मृति पुराणानां आलयं करुणालयम्।
नमामि भगवत्पाद शंकरं लोक शंकरम्॥

श्रीमत्पयोनिधि निकेतन चक्रपाणे
भोगींद्र भोग मणिरञ्जित पुण्यमूर्ते।
योगीश शाश्वत शरण्य भवाब्धिपोत
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥ १॥

ब्रह्मेन्द्र रुद्र मरु दर्क किरीटकोटि
सङ्घट्टि तांघ्रि कमलामल कांति कांत।
लक्ष्मी लसत्कुच सरोरुह राजहंस
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥ २॥

संसार दाव दहनाकुल भीकरोरु
ज्वालावळीभि रभिदग्ध तनूरुहस्य।
त्वत्पादपद्म सरसीं शरणागतस्य
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥ ३॥

संसार जालपतितस्य जगन्निवास
सर्वेन्द्रियार्थ बडिशाग्र झषोपमस्य।
प्रोत्थंभित प्रचुर तालुक मस्तकस्य
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥ ४॥

संसार कूप मतिघोर मगाधमूलं
संप्राप्य दुःखशत सर्प समाकुलस्य।
दीनस्य देव कृपया परमागतस्य
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥ ५॥

संसार भीकर करीन्द्र कराभिघात
निष्पीड्य मानवपुष स्सकलार्ति नाश।
प्राणप्रयाण भवभीति समाकुलस्य
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥ ६॥

संसार सर्प विषदिग्ध महोग्र तीव्र
दंष्ट्राग्र कोटि परिदष्ट विनष्टमूर्तेः।
नागारि वाहन सुधाब्धि निवास शौरे
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥ ७॥

संसार वृक्ष मघबीज मनन्तकर्म
शाखाजुतं करणपत्र मनंगपुष्पम्।
आरुह्य दुःखफलितं पततो दयाळो
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥ ८॥

संसार सागर विशाल कराळ काल
नक्र ग्रह ग्रसित निग्रह विग्रहस्य
व्यग्रस्य राग निशयोर्मि निपीडितस्य
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥ ९॥

संसार सागर निमज्जन मुह्यमानं
दीनं विलोकय विभो करुणानिधे माम्।
प्रह्लादखेद परिहार कृतावतार
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥ १०॥

संसार घोर गहने चरतो मुरारे
मारोग्र भीकर मृग प्रचुहार्थितस्य
आर्तस्य मत्सर निदाघ निपीडितस्य
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥ ११॥

लक्ष्मीपते कमलनाभ सुरेश विष्णो
यज्ञेश यज्ञ मधुसूदन विश्वरूप।
ब्रह्मण्य केशव जनार्दन वासुदेव
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥ १२॥

अन्तस्य मे हृत विवेक महाधनस्य
चौरैर्महो बलिभिरिन्द्रिय नामधेयैः।
मोहान्ध कार कुहरे विनिपातितस्य
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥ १३॥

प्रह्लाद नारद पराशर पुण्डरीक
व्यासादि भागवत पुङ्गव हृन्निवास।
भक्तानुरक्त परिपालन पारिजात
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥ १४॥

लक्षीनृसिंह चरणाब्ज मधुव्रतेन
स्तोत्रं कृतं शुभकरं भुवि शंकरेण ।
ये तत् पठन्ति मनुजाः हरिभक्ति युक्ताः
ते यान्ति तत्पद सरोजमखण्ट रूपम् ॥ १५ ॥

कायाधव परित्राण भावित स्तंभ जन्मने ।
ब्रह्मेन्द्रादिस्तुताय स्यात् श्रीनृसिंहाय मङ्गळम् ॥

श्रीमत् शङ्कराचार्य विरचित श्री लक्ष्मीनृसिंह करावलम्ब स्तोत्रं समाप्तम्

कवितार्किकसिंहाय कल्याणगुणशालिने ।
श्रीमते वेङ्कटेशाय वेदान्तगुरवे नमः ॥

॥ सर्वं श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥

****

Hosted by tripod